सामान्य जानकारी

दिनांक: 18 अगस्त २०२०

इस लेख का सन्दर्भ, भूमिका

- MCVK इंदौर में पिछले एक-दो वर्ष में हुए घटनाओं को लेकर कुछ १५-२० मित्रों से पिछले २ माह से whats-app पर वार्तालाप हुई |
- इसमें एक मत हमारे सामूहिक प्रचार-प्रसार में MCVK से दूरी बनाना आया |
- कुछ मित्र MCVK के व्यवस्थापकों के साथ संवाद स्थापित किये हैं |
- कुछ मित्रों को इसके सन्दर्भ में अपना मत स्पष्ट करने की आवश्यकता प्रतीत हुई, इसीलिए यह नोट जारी किया जा रहा है |

श्री ए. नागराजजी द्वारा प्रतिपादित 'मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' मानव के सभी आयामों का विकल्पात्मक समाधान प्रस्तुत करता है। इसके लोकव्यापीकरण हेतु परिचयात्मक 'जीवन विद्या/अध्ययन-पठन शिविर' देशभर में 25-30 वर्षों से चल रहे हैं।

अनेक वर्षों से इसे समझने, जीने में अभ्यास करने और इसके लोकव्यापीकरण करने हेतु कई प्रतिभाशाली, श्रमशील, शुभ चाहने वाले व्यक्ति, समूह अनेक जगह प्रयास करते आ रहे हैं। इनमें से एक स्थान 'मानव चेतना विकास केंद्र' पिवड़य, इंदौर (MCVK Indore) में सन २०१०-१२ से कार्यरत है। इसके संस्थापक हमारे मित्र हैं |

MCVK के द्रुत गति एवं सफलताओं को लेकर हम सभी आशान्वित एवं गौरावन्वित रहे हैं। वहां एक परिवार का अपने धन को शुभ कार्यों के लिए समर्पित करना, सामूहिक श्रमशीलता, सहभागिता, उत्पादन इत्यादि से हम सभी उत्साहित हुए । और अनेकों परिवारों द्वारा ऐसा आचरण एवं समर्पण देख कर हमारी आशा और बनी |

यह हमें अत्यंत खेदजनक लग रहा है कि पिछले एक-दो वर्षों में MCVK में कई घटनाएं चिंता का कारण बन गए। इसलिए ध्यानाकर्षण के लिये, इस कथन की आवश्यकता हुई।

इस कथन का उद्देश्य:

1. 'चुप रहना' अनुमोदन लग रहा है | हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं रहा, इसीलिए सामाजिक दायित्व के निर्वहन की आवश्यकता प्रतीत हुई है।
2. जो मध्यस्थ दर्शन, जीवन विद्या को समझने में जुड़ना चाहते हैं, उन्हें अवगत करना आवश्यक लगा ।

यह हमारा उद्देश्य नहीं है:

1. किसी व्यक्ति अथवा परिवार विशेष पर दोषारोपण करना ।
2. किसी व्यक्ति/स्थान की स्वतंत्रता पर आक्षेप करना, सुधारना।
3. जीवन विद्या के लोकव्यापीकरण/ शुभ के रास्ते में विघ्न पैदा करना।

हमारे अनुसार, MCVK में निम्न बिंदु मध्यस्थ दर्शन-सह अस्तित्ववाद के प्रतिपादन से <u>मेल नहीं खाती हैं:</u>

1. प्रतिपादित अध्ययन विधि, एवं संस्था का लिखित अवधारणा।
2. संस्कृति /उत्सव मनाने के विधि - विशेष रूप से 'भावोत्सव' का स्वरूप ।
3. सभ्यता - नर-नारियों में शिष्टाचार विधि (स्थानीय स्वीकृति के विपरीत होना) |
4. सामूहिक धन का उपयोग विधि |
5. दर्शन के अन्य स्थानों एवं अध्येयताओं को निम्न बताना |
6. श्रद्धेय नागराजजी के साथ रहे समय, उनके आचरण के कुछ पक्ष जो हमें सुनने में आये है, वे असत्य उल्लेख हैं|

हमारा उपरोक्त को कहने का आधार MCVK में घटित घटनाएं हैं, जो कथित, लिखित, विडियो, ऑडियो, तथा वहां रहे अनेकों व्यकित, परिवारों के कथन पर आधारित हैं, उनमें से कुछ आज भी चर्चा, प्रसारण (पब्लिक डोमेन) में उपलब्ध हैं ।

यह कथन प्रस्तुत करते हुए हमें अच्छा नहीं लग रहा है।

जिम्मेदारी

1. हम लोग अपने व्यक्तिगत अधिकार पर इस दस्तावेज को क्रियान्वित व जारी कर रहे हैं।
2. यह किसी संस्था, 'केन्द्रीय समिति' इत्यादि के पक्ष से या किसी दुसरे के ओर से नहीं लिख रहे हैं।
    - (नोट: जीवन विद्या में 'केन्द्रीय समिति' का कोई ढांचा नहीं है | प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, परिवार समूह/संस्थान या मित्र समूह व्यवस्था के अपेक्षा/अर्थ में एक दुसरे के लिए, कोई सामूहिक-सार्वजानिक कार्यक्रम के लिए विधि-सहित पूरक होने प्रस्तुत होता है, अभ्यासरत है |)
3. यह अधोउल्लेखित लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है। जो आपस में दो माह तक विचार-विमर्श और आपसी सहमति से तय हुई है।
4. हम सभी पिछले १५ -२०-२५ वर्षों से श्रद्धेय नागराजजी को निकट रूप से जाने हैं, हम में से कुछ उनके साथ जीए हैं, तथा मध्यस्थ दर्शन के अध्ययन, अभ्यास, अध्यापन में अग्रसर हैं।

हमारी कामना यही है कि शीघ्र ही MCVK पुन: मध्यस्थ दर्शन के अनुसार/अनुकूल हो जाए | इसके लिए कुछ आवर मित्र संवाद पूर्वक संलग्न हैं | इसके लिए हमारी जो भी भूमिका विधि विहित रूप से हो सकती है, हम करेंगे |

आगे शुभ के अपेक्षा के साथ,

	नाम	**स्थानीय पता**
1	सुरेन्द्र पाठक	अहमदाबाद
2	सुनीता पाठक	अहमदाबाद
3	राकेश गुप्ता	बैंगलोर
4	प्रियंका गुप्ता	बैंगलोर
5	श्रीराम नरसिम्हन	पुणे
6	गौरी श्रीहरी	पुणे
7	साधन भट्टाचार्य	किरितपुर
8	बी आर अग्रवाल	रायपुर
9	सुवर्णा शास्त्री	पुणे
10	योगेश शास्त्री	अछोटी